राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली शनिवार • 5 अक्टूबर • 2019
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

सिद्धांत न त्यागें। चाहे ऐसा करने वाले आप अकेले ही क्यों न हों

-जॉन एडम्स

सुरक्षा जरूरी

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाए से बौखलाए पाकिस्तान ने अब आतंकवादी हमलों से भारत को थर्राने का मंसूबा पाला है। पाकिस्तान के खूंखार आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के छह आतंकवादियों के राजधानी दिल्ली में घुसने की खबर से सुरक्षा एजेंसियां चौकन्नी हैं, और पाकिस्तान की साजिश का वज्र जवाब देने के लिए तैयार हैं। त्योहार के मौके पर आतंकी हमले की आशंका को देखते हुए सुरक्षा एजेंसियां ज्यादा सजग हैं, और संदिग्धों की धरपकड़ की जा रही है। खबर है कि जैश के आतंकवादी दिल्ली, जम्मू-कश्मीर समेत देश के अन्य बड़े शहरों में धमाके कर सकते हैं। इनके निशाने पर एयरपोर्ट, सरकारी प्रतिष्ठान और धार्मिक स्थल हैं। इस नाते इन पर नजर रखना निहायत जरूरी है। कश्मीर के मसले पर चारों तरफ

से मुंह की खाने के बावजूद पाकिस्तान की मनोदशा पर रत्ती भर भी फर्क नहीं पड़ा है। वह अभी भी भारत को तबाह करने का मंसूबा पाले बैठा है, जबकि खुद उसकी हालत बेहद खस्ताहाल है। आर्थिक मोर्चे पर वह बदहाल हो चुका है। इसके बावजूद भारत को अस्थिर करने की कोशिशों से बाज नहीं आ रहा है। कभी आतंकवादियों को भारत भेजने तो कभी ड्रोन से हथियारों की खेप भारत भिजवाने तो कभी सीमा रेखा पर बमबारी कर रहा है। जैश के आतंकवादियों के जरिए भारत में धमाके कराने की उसकी साजिश पहले की तरह फिर विफल होगी। उसे समझना होगा कि इस हरकत से भारत का कुछ नहीं बिगड़ेगा। अलबत्ता, भारत को उसकी कुटिलता से सतर्क रहना होगा। जैश पहले भी उरी और पुलवामा में भारतीय सुरक्षा बलों को काफी क्षति पहुंचा चुका है। उसके कश्मीर में 56 फाइटर्स सक्रिय हैं, जिनमें से 23 कश्मीर के स्थानीय युवा हैं। भारत के लिए चिंता का सबब पंजाब में खालिस्तान जिंदाबाद फोर्स की बढ़ी सक्रियता है। निश्चित तौर पर भारतीय खुफिया एजेंसी और पुलिस फोर्स पर ऐसी दुश्वारियों से पार पाने की खासी चुनौती है। एक चुनौती देश के भीतर मौजूद उन गुटों से है, जिनके दिल और दिमाग पाकिस्तान से नियंत्रित होते हैं। और इनकी पहचान भी कहीं ज्यादा कठिन है। इसके बावजूद सुरक्षा बलों ने इन पर काफी हद तक नियंत्रण पाया है। लड़ाई लंबी है। मगर पाकिस्तान के नापाक इरादों को कभी फलीभूत नहीं होने देने का हमारा संकल्प अटूट है। पाकिस्तान को नापाक हरकत का माकूल जवाब मिलेगा।

चोकसी गबनकर्ता

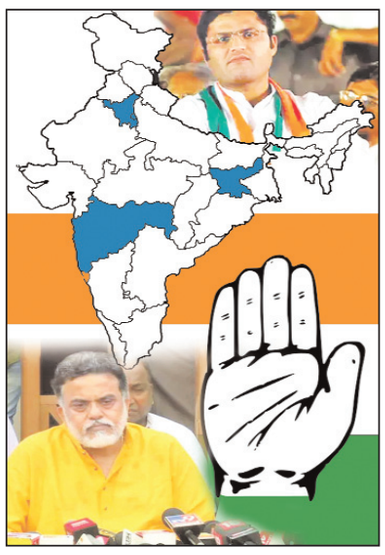

यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया द्वारा भगोड़े कारोबारी मेहुल चोकसी और उसकी कंपनी गीतांजलि जेम्स को विल फुल डिफॉल्टर यानी जानबूझकर कर्ज नहीं चुकाने वाला घोषित करना औपचारिक कदम भर है। चोकसी और उसकी कंपनी को 332 करोड़ रुपये का बकाया चुकाने का नोटिस भी भेजा गया है। सार्वजनिक नोटिस के अनुसार यूनाइटेड बैंक ने कंपनी और चोकसी को जानबूझकर कर्ज नहीं चुकाने वाला घोषित कर दिया। चोकसी जब देश से बाहर है, उसके सारे आउटलेटों पर सरकारी ताले हैं, सपत्तियां तक जब्त हो रही हैं तो उसके कर्ज लौटाने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। चोकसी के अलावा उसकी पत्नी प्रीति चोकसी और गीतांजलि जेम्स के निदेशकों को भी बैंक की ओर से नोटिस दिया जाना कानूनी प्रक्रिया के तहत औपचारिकता पूरी करना ही है। कुख्यात बैंक घोटाला कांड में नीरव मोदी के साथ चोकसी भी आरोपी है। दोनों को देश लाने की कोशिश हो रही हैं। नीरव तो लंदन की जेल में

बंद है और अपने भारत प्रत्यर्पण की कानूनी लड़ाई लड़ रहा है। चोकसी हालांकि जेल में नहीं है, पर उसके प्रत्यर्पण की अपील की जा चुकी है। वह वहां मुकदमा लड़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र महासभा सम्मेलन में आए एंटीगुआ के प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात के पूर्व बयान दिया था कि चोकसी एक धोखबाज है, और उसे भारत प्रत्यर्पित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि न्यायालय का मामला खत्म होते ही उसे भारत भेज दिया जाएगा। तो इससे उम्मीद बंधती है। भारत की राजनयिक कोशिश यह भी है कि एंटीगुआ उसकी नागरिकता रद्द कर दे। जो भी हो यह साफ है कि आने वाले समय में उसका भारत आना निश्चित है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि पूरा मामला राजनीति के कारण ज्यादा बिगड़ा है। चोकसी का कहना है कि वह नीरव मोदी के साथ कुछ दिनों के लिए और केवल एक कंपनी में साझीदार था। सामान्यतः कोई कंपनी कर्ज चुकाने में विफल रहती है तो बैंक की कोशिश अपना धन निकालने की होनी चाहिए। जो बेईमान हैं, और जानबूझकर बैंकों को धोखा देता है, जैसा नीरव ने किया, तो पूरी कानूनी सख्ती बरतिए, लेकिन हमारे यहां इस तरह राजनीतिक विवाद पैदा कर दिया जाता है कि कोई व्यापारी अपने को संभालने का कोई कदम तक नहीं उठा सकता। यह स्थिति किसी के हित में नहीं। मेहुल चोकसी से आराम से वसूली हो सकती थी।

कटाक्ष/ कबीरदास

गांधी, गोडसे दोनों की जय

सेकुलरवालों की यह तो सरासर नाइंसाफी है। भगवा भाई जितने ज्यादा गांधीमय होते जाते हैं, ये उतनी ही ज्यादा डिमांड बढ़ाते जाते हैं। पहले बेचारों से डेढ़ सौ साल के गांधी को, हजारों साल पुराने राष्ट्र का पिता कहलवाया। फिर बेचारों को डेढ़ सौवीं सालगिरह पर भव्य आयोजन करा-कराकर, यात्राएं निकलवा-निकलवा कर थकाया। गांधी प्रेम दिखाने के चक्कर में बेचारों ने स्वच्छता का विश्व रिकॉर्ड तक बनाया। अब कह रहे हैं कि गोडसे जी की भर्त्सना कर के दिखाओ, तब तुम्हें गांधी भक्त मानेंगे!

भला गांधी की भक्ति से गोडसे को गाली देने का क्या संबंध है? गोडसे को गाली देने को गांधी की भक्ति की शर्त क्यों बनाया जा रहा है? सेकुलरवालों के लिए होगी यह शर्त, केसरिया भाइयों से इसे मानने की मांग क्यों की जा रही है? वे ऐसी शर्त हर्गिज मंजूर नहीं करेंगे। बेशक, केसरिया भाई एक विधान, एक प्रधान और एक जुबान में यकीन करते हैं। माना कि एक टैक्स, एक चुनाव के बाद, अब वे एक पहचान पत्र में भी यकीन करने लगे हैं। माना कि वे एक नेता और एक पोस्ट बाकी सब लैम्प पोस्ट में यकीन करते हैं। लेकिन, इसका मतलब यह तो नहीं है कि वे गांधी और गोडसे, दोनों में से एक के ही भक्त हो सकते हैं। जिस देश में एक साथ राम और रावण की पूजा की जाती है, वहां गांधी और गोडसे में एक की पूजा का आग्रह क्यों? केसरियाई भाई इस देश की विविधता के सच्चे रखवाले हैं, और उनसे इतनी उम्मीद तो की ही जा सकती है कि गांधी को पूजा लायक मनते हैं, तो गोडसे की भी पूजा कर लें।

माना कि गोडसे ने गांधी को मारा था। उसके लिए गोडसे को फांसी भी हो गई यानी हिसाब बराबर! फिर एक की पूजा और दूसरे की निंदा की मांग क्यों? वैसे भी यह मौका गांधी के 150वें बर्थ डे का है। खुशी के इस मौके पर हत्या वगैरह का असुगनी जिक्र लाना ही क्यों? उसके लिए 30 जनवरी का दिन है तो सही, हालांकि अब तो उस रोज भी स्वच्छता, नशा मुक्ति का ही ज्यादा शोर होता है। बात भी सही है, पुराने जख्मों को हर वक्त कुरेदते रहने से क्या हासिल?

घमासान चरम पर

कांग्रेस

प्रमोद जोशी

लोकसभा चुनाव में मिली भारी पराजय के बाद कांग्रेस को संभलने का मौका भी नहीं मिला था कि कर्नाटक और तेलंगाना में बगावत हो गई। राहुल गांधी के इस्तीफे के कारण पार्टी के सामने केंद्रीय नेतृत्व और संगठन को फिर से खड़ा करने की चुनौती है। फिलहाल, सोनिया गांधी को फिर से सामने लाने के अलावा पार्टी के पास कोई विकल्प नहीं था। अब पहले महाराष्ट्र और हरियाणा और उसके बाद झारखंड और फिर दिल्ली में विधानसभा चुनावों की चुनौती है। इनका आगाज भी अच्छा होता नजर नहीं आ रहा है।

महाराष्ट्र में संजय निरुपम और हरियाणा में अशोक तंवर के बगावती तेवर 'प्रथम ग्रासे मक्षिका पातः' की कहावत दोहरा रहे हैं। महाराष्ट्र में संजय निरुपम भले ही बहुत बड़ा खतरा साबित न हों पर हरियाणा में पहले से ही आंतरिक कलह के कारण लड़खड़ाती कांग्रेस के लिए यह अशुभ समाचार है। संजय और अशोक, दोनों का कहना है कि पार्टी के वफादार कार्यकर्ताओं की उपेक्षा हो रही है। दोनों की बातों से लगता है कि पार्टी में राहुल के वफादारों की अनदेखी की जा रही है। कुछ समय पहले लगता था कि हरियाणा में अशोक तंवर की बातें सुनी जाएंगी। इस वजह से अगस्त के तीसरे हफ्ते में लग रहा था कि भूपेंद्र सिंह हुड्डा कांग्रेस का साथ छोड़कर एक नई पार्टी बनाएंगे पर पिछले महीने सोनिया गांधी से हुड्डा की मुलाकात के बाद तय हो गया था कि पार्टी अध्यक्ष चाहे कोई भी हो, चाबी हुड्डा के पास ही रहेगी यानी टिकट उनके इशारे पर ही दिए जाएंगे। हाईकमान पर उनके बागी तेवरों का असर इतना ज्यादा हुआ कि पार्टी के अशोक तंवर किनारे लगा दिए गए।

पिछले महीने ही तंवर के स्थान पर कुमारी शैलजा को पार्टी अध्यक्ष बना दिया गया। हुड्डा अब चुनाव संचालन कर रहे हैं। टिकट उनके इशारे पर दिए गए हैं। सवाल है कि तंवर के बागी तेवरों से अब क्या होगा? उनका कहना है कि हमने लगातार पांच चुनावों में पार्टी के लिए जान लगाकर काम किया। और हमें दूध से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया गया। हरियाणा में पार्टी अब हुड्डा कांग्रेस बन गई है, और उन लोगों को टिकट नहीं दिया गया है, जो चुनाव में जीत सकते थे। तंवर समर्थकों को टिकट नहीं दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि कुछ स्वार्थी तत्व नहीं चाहते कि पार्टी के भीतर से नया नेतृत्व उभर कर आए। वे वंशवाद पर ही चलना चाहते हैं। अगर मेरी सुनते तो आज कांग्रेस का नाश नहीं होता। सवाल है कि तंवर किस हद तक हुड्डा को नुकसान पहुंचा पाएंगे? उन्होंने पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है, पर यह भी कहा है कि मैं एक साधारण कार्यकर्ता की तरह काम करूंगा। बीजेपी ने मुझे बीते तीन महीने में छह बार पार्टी में शामिल होने का प्रस्ताव दिया लेकिन मैं नहीं गया। क्या वे पार्टी के वफादार बनकर

अपनी हैसियत बना पाएंगे? हुड्डा के बावजूद कांग्रेस बुरी तरह हारी तो तंवर की वापसी का मौका है, पर कांग्रेस को सफलता मिली तो तंवर का भविष्य अधर में है। क्या वेपार्टी नेतृत्व को ब्लैकमेल कर पाएंगे? उनकी परीक्षा की भी यही घड़ी है। तंवर ने अपनी लड़ाई को दिल्ली तक ले जाने की कोशिश भी की और बुधवार को अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस मुख्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। उन्हें समझाने की कोशिशें हुईं भी होंगी तो वे सफल नहीं हुईं।

तंवर और उनके समर्थकों ने आरोप लगाया कि टिकट वितरण में भ्रष्टाचार हो रहा है, और पार्टी ने सोहना विधानसभा सीट का टिकट पांच करोड़ रुपये में बेचा है। जिन लोगों को चुना जा रहा है वे कैसे जीतेंगे? चुनाव के तीन सप्ताह पहले इस प्रकार की बातें निश्चित रूप से पार्टी के लिए अशनि संकेत है। निरुपम ने चुनाव में पार्टी के लिए प्रचार करने से इनकार कर दिया है। उन्होंने ट्वीट किया, 'ऐसा लगता है कि अब कांग्रेस पार्टी मेरी सेवा नहीं चाहती। मैंने विधानसभा चुनाव के लिए मुंबई में सिर्फ एक सीट मांगी थी, वह भी नहीं दी गई। हालांकि मैंने आलाकमान को पहले ही बता दिया था कि ऐसी स्थिति में मैं पार्टी के लिए चुनाव प्रचार नहीं करूंगा। यह मेरा आखिरी फैसला है।' हालांकि उन्होंने पार्टी छोड़ने की धमकी नहीं दी है, पर यह भी कहा है, 'कांग्रेस आलाकमान मेरे साथ जिस तरह का बर्ताव कर रहा है, उससे नहीं लगता कि कांग्रेस में ज्यादा दिन तक रहूंगा।' उन्होंने शुक्रवार को पत्रकारों से कहा कि सोनिया गांधी के करीबी लोग पूर्वाग्रह से प्रेरित हैं। उन्होंने पार्टी की संगठनात्मक संरचना को भी दोष दिया और कहा कि इन सब कारणों से पार्टी डूब जाएगी।

कांग्रेसी उम्मीदवारों की जारी की गई लिस्ट में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चह्वाण का नाम शामिल है।288 सदस्यों वाली विधानसभा में कांग्रेस और एनसीपी ने आपस में125-125 सीटें बांटी हैं। बाकी 38 सीटें गठबंधन के अन्य सहयोगी दलों के लिए छोड़ी गई हैं। 2014 के चुनाव में बीजेपी ने 122 और शिवसेना ने 63 सीटें जीती थीं। कांग्रेस और एनसीपी को क्रमशः 42 और 41 सीटें मिली थीं। हरियाणा विधानसभा में कुल 90 सीटें हैं। 2014 में बीजेपी ने 47 सीटें जीती थीं। कांग्रेस को केवल 15 सीटें ही मिली थीं। हरियाणा में कांग्रेस मजबूत पार्टी रही है। बीजेपी की स्थिति इस राज्य में कभी बहुत मजबूत नहीं रही है, पर पिछले पांच वर्षों में कहानी बदली है। अंदरूनी कलह और राज्य में बदलते जातीय समीकरणों के कारण कांग्रेस लगातार कमजोर होती गई है। राज्य में जाट बड़ी ताकत रहे हैं पर हाल के चुनावों में बड़े हुड्डा, छोटे हुड्डा और रणदीप सुरजेवाला की हार से जाटों की ताकत को लेकर बना भ्रम टूटा है। दूसरी तरफ गैरज्जाट समूह बीजेपी के झंडे तले संगठित हैं। 2014 के लोक सभा और फिर विधानसभा चुनाव में बीजेपी बड़ी ताकत बनकर उभरी है। पहले तो वह ओम प्रकाश चौटाला की इनेलो की पिछलग्गू हुआ करती थी, पर 2014 के लोक सभा चुनाव के बाद सब कुछ बदल गया है।

कांग्रेस को उम्मीद है कि मनोहर लाल खट्टर की सरकार के खिलाफ सत्ता-जनित रोष (एंटी इनकमबेंसी) काम करेगा पर पिछले लोक सभा चुनाव में राज्य ने मोदी लहर का साथ दिया। कांग्रेस के भीतर हुड्डा लगातार तंवर के खिलाफ शिकायतें करते रहे हैं। इस साल लोक सभा चुनाव में कांग्रेस की पराजय के बाद उन्हें मौका मिल गया। पार्टी के वरिष्ठ नेता गुलाम नबी आजाद ने दोनों के टकराव को रोकने की कोशिशें भी कीं, जिनमें वे सफल नहीं हो पाए। अब नहीं लगता कि पार्टी हुड्डा और तंवर को साथ लेकर चल पाएगी। इस बगावत के कारण तंवर को कुछ हासिल हो न हो, पर वे हुड्डा के मंसूबों को ध्वस्त कर सकते हैं। यों भी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय पराभव को देखते हुए राज्यों में कार्यकर्ताओं के हौसले पस्त हैं।

महाराष्ट्र में संजय निरुपम और हरियाणा में अशोक तंवर के बगावती तेवर 'प्रथम ग्रासे मक्षिका पातः' की कहावत दोहरा रहे हैं। महाराष्ट्र में संजय निरुपम भले ही बड़ा खतरा साबित न हों पर हरियाणा में पहले से ही आंतरिक कलह के कारण लड़खड़ाती कांग्रेस के लिए यह अशुभ समाचार है। दोनों की बातों से लगता है कि पार्टी में राहुल के वफादारों की अनदेखी की जा रही है। कुछ समय पहले लगता था कि अशोक तंवर की बातें सुनी जाएंगी। लेकिन सोनिया से हुड्डा की मुलाकात के बाद तय हो गया था कि टिकट बांटने में हुड्डा की ही चलेगी

भारत-पाकिस्तान उलझे तो ...

परमाणु युद्ध हुआ तो एक सप्ताह से कम समय के भीतर ही 50 लाख से 12.5 करोड़ लोगों की जानें जा सकती हैं

- **2025** तक दोनों देशों के पास पास कुल **400** से **500** परमाणु हथियार होंगे
- यदि युद्ध हुआ तो धरती पर पहुंचने वाली सूर्य की रोशनी में **20** से **35%** तक की कमी आएगी और इस ग्रह का तापमान **2** से **5** डिग्री सेल्सियस तक कम हो जाएगा
- इस युद्ध के सीधे प्रभाव के चलते एक सप्ताह से कम समय के भीतर ही **50** लाख से **12.5** करोड़ लोगों की जान जा सकती है
- दुनियाभर में फैलने वाली भुखमरी जैसे अतिरिक्त कारणों से मृतकों की संख्या और बढ़ सकती है
- परमाणु युद्ध होने पर पूरी दुनिया में वर्षा में **15** से **30%** तक की कमी हो सकती है
- धरती पर पेड़-पौधों की संख्या में भी **15** से **30** फीसद तक की कमी हो सकती है
- समुद्री जीवन में **5** से **15** प्रतिशत तक की कमी हो सकती है

स्रोत- कोलोराडो बोल्डर विश्वविद्यालय और रुतगेर्स विश्वविद्यालय के विश्लेषकों का एक अध्ययन

ट्विट

आरबीआई ने अब जीडीपी विकास अनुमान में काफी कटौती की है। सरकार ने वास्तविकता को लंबे समय तक छिपाने की कोशिश की है लेकिन यह संभव नहीं है। हम भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति पर एक श्वेत पत्र की मांग करते हैं। हम इस तरह भारत के भविष्य को नष्ट करने की अनुमति नहीं दे सकते।

सीताराम येचुरी, माकपा
@SitaramYechury

स्वच्छता की आर्थिकी

सामयिक | सतीश सिंह

महात्मा गांधी का कहना था कि आजादी से ज्यादा जरूरी है स्वच्छता। स्वच्छता को सुनिश्चित करके ही हम स्वस्थ रह सकते हैं। स्वच्छता से गांवों को आदर्श बनाया जा सकता है। नदियों को साफ रखकर हम नई पीढ़ी को जीवनदान दे सकते हैं। अपनी सभ्यता-संस्कृति को अक्षुण्ण रख सकते हैं। खुले में शौच करने से परहेज जरूरी है। देश को स्वच्छ बनाने के लिए हमें शौचालय बनाना चाहिए। साथ ही, उसे हमेशा साफ रखना चाहिए। अपने घर एवं आसपास की गंदगी की सफाई खुद करनी चाहिए ताकि स्वच्छता हमेशा बनी रहे।

गंदगी से बीमारी फैलती है, जिससे जान-माल का नुकसान होता है। गांवों में आज भी आमजन शौच के लिए घर से बाहर जाते हैं। गांव एवं शहर, दोनों का विकास अनियोजित तरीके से हो रहा है, जिसके कारण घर के सामने नालियां बजबजाती रहती हैं। शहरों में अपार्टमेंटों का जाल बिछ गया है। एक अपार्टमेंट में एक गांव बसता है। नालियों के ऊपर सड़कों का निर्माण हो रहा है, लेकिन नालियों और सड़कों की साफ-सफाई का ध्यान नहीं रखा जाता। गंदगी की वजह से डायरिया, त्वचा से जुड़े इंफेक्शन, न्यूमोनिया, गैस, फूड पोइजनिंग आदि बीमारियां होती हैं। आर्थिक रूप से सबल अपना इलाज करा लेते हैं, लेकिन गरीब इलाज के अभाव में असमय ही काल-कवलित हो जाते हैं। वर्ल्ड डेटा लैब के अनुसार भारत में 2019 में लगभग 5 करोड़ लोग प्रति दिन लगभग 100 रुपये कमाते हैं। साफ है, इतनी कम आय वाले लोग बीमार होने पर कैसे अपना इलाज कराएंगे। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2016 में भारत की आबादी लगभग 1 अरब 32 करोड़ थी, जबकि सकल राष्ट्रीय आय लगभग 5300 रुपये और लोगों की औसत आयु 67 वर्ष से 70 वर्ष के बीच थी। 2017 में 5 वर्ष की उम्र तक में 1000 बच्चों में से 39 बच्चे मर रहे थे। 2016 में 15 वर्ष से 60 वर्ष की उम्र के बीच 1000 में 214 लोग मर रहे थे। 2014 में स्वास्थ्य पर लोग औसतन लगभग 270 यूएस डॉलर खर्च कर रहे थे।

2014 में स्वास्थ्य पर प्रतिशत के रूप में कुल सकल घरेलू उत्पाद का 4.7 खर्च कर रहे थे। अगर 5 करोड़ लोग, जो 36 हजार रुपये सालाना कमाते हैं, 20,000 रुपये बीमारियों के इलाज पर खर्च करेंगे तो जीवन यापन कैसे करेंगे। बीमारियों की एक बड़ी वजह दूषित जल है। नीति आयोग की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि देश में 70 प्रतिशत जल की आपूर्ति दूषित हो रही है। सेफ वॉटर नेटवर्क की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक भी जल गुणवत्ता सूचकांक के 122 देशों में भारत का स्थान 120वां है। वर्ष 2050 तक बढ़ती आबादी और जल के बढ़ते कारोबारी इस्तेमाल की वजह से प्रति व्यक्ति जल की खपत में 40 से 50 प्रतिशत तक की गिरावट आ सकती है। 'वॉटर एड' की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 16.3 करोड़ लोग स्वच्छ जल पीने से महरूम हैं। भारत के ग्रामीण इलाकों में लगभग 63 करोड़ लोग ऐसे हैं, जो आज भी दूषित जल पीने को मजबूर हैं, जबकि 2017 में विश्व जल दिवस के दिन संयुक्त राष्ट्र ने स्वच्छ जल पीना इंसान का बुनियादी हक बताया था। 2008 की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत की 88 प्रतिशत आबादी के पास जल उपलब्ध था, लेकिन शहरी क्षेत्र में पीने योग्य पानी तक पहुंच केवल 31 प्रतिशत आबादी की थी, जबकि ग्रामीण इलाकों में यह प्रतिशत महज 21 था। आज देश की कोई भी नदी साफ नहीं है। हमने उन्हें कूड़ादान बना दिया है। इसकी वजह से हम स्वास्थ्य के ऊपर ज्यादा खर्च कर रहे हैं। साथ ही साथ नदियों की सफाई पर भी हर साल खरबों रुपये खर्च कर रहे हैं।

सेंट्रल पल्यूशन कंट्रोल बोर्ड की 2015 की रिपोर्ट के अनुसार शहरों में प्रति दिन 61,948 मिलियन लीटर गंदा पानी जमा हो जाता है, जिसमें से सिर्फ 38 प्रतिशत पानी की सफाई करके दोबारा इस्तेमाल किया जाता है। शेष पानी नदियों में डाल दिया जाता है, या वह जमीन के अंदर चला जाता है। हम नदियों में कूड़ा-कचरा जरूर डाल रहे हैं, लेकिन उनकी सफाई पर ध्यान नहीं दे रहे। उदाहरण के तौर पर गंगा को स्वच्छ बनाने के लिए अलग मंत्रालय भी बनाया गया है। 2015 के बजट में 20,000 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया था। 'नमामि गंगे' के नाम से गंगा की सफाई योजना शुरू की गई है, जिसके तहत गंगा को स्वच्छ बनाने की कोशिश जारी है, लेकिन अभी तक इसके अपेक्षित परिणाम नहीं निकले हैं। हालांकि, इस मद में अरबों-खरबों रुपये खर्च किए जा चुके हैं। कहा जा सकता है कि आज स्वच्छता का अर्थ व्यापक हो गया है। अब हमें स्वच्छता को केवल गंदगी से जोड़कर नहीं देखना होगा। गंदगी को तो साफ करें ही साथ ही पर्यावरण को भी स्वच्छ बनाएं। देश और धरती को बचाने के लिए यह जरूरी है।

ध्यान | ओशो

ध्यान की प्रक्रिया बड़ी सरल है। थोड़ी सी धैर्य क्षमता चाहिए। और खोने को क्या है? अगर कुछ न भी मिला तो घंटे भर आराम ही हो लेगा। लेकिन मैं जानता हूं अपने अनुभव से और उन हजारों लोगों के अनुभव से, जिनको मैंने इस प्रक्रिया से गुजारा है, एक दिन वह घड़ी आ जाती है, वह महा घड़ी आ जाती है कि मन का रास्ता खाली हो जाता है, धूल भी नहीं उड़ती, जानने को कुछ भी शेष नहीं रह जाता। और जब जानने को कुछ भी शेष नहीं रह जाता, तब सिर्फ जानने वाला शेष नहीं रह जाता। और उस जानने वाले को अब कोई उपाय नहीं है किसी और को जानने का, सिवाय अपने को जानने के। और एक बार भी किसी ने अपना स्वाद ले लिया तो उसने अमृत का स्वाद ले लिया। फिर न कोई अंधेरा है, न कोई अचेतना। और वह एक घड़ी धीरे-धीरे तुम्हारी चौबीस घड़ियों पर फैल जाएगी। रहोगे फिर भी तुम बाजार में, रहोगे फिर भी तुम घर में। वही होगी पत्नी, वही होंगे बच्चे। लेकिन तुम वही नहीं होओगे। तुम्हारे जीवन में एक क्रांति घटित हो जाएगी। तुम्हारे देखने के सारे परिप्रेक्ष्य, तुम्हारी आंखें बदल जाएंगी। एक शांति-और ऐसी शांति, जिसकी कोई गहराई कभी नाप नहीं सका। एक प्रकाश, ऐसा प्रकाश, जिसमें न तो कोई तेल है, न कोई बाती-बिन बाती बिन तेल। इसलिए उसके चुकने का कोई सवाल नहीं है। इस अनुभूति के बिना जीवन व्यर्थ है। इस अनुभूति को पा लेना उस परम ऐश्वर्य को पा लेना है, जो कभी चुकता नहीं है। फिर तुम दोनों हाथ उलीच सकते हो, लेकिन उसे खाली नहीं कर सकते। इस ऐश्वर्य की स्थिति को ही हमने ईश्वर कहा है। ईश्वर ऐश्वर्य शब्द से ही बना है। इसलिए हमारे पास ईश्वर के लिए जो शब्द है, वह दुनिया की किसी भाषा में नहीं है। तुम्हें याद रहे, इसलिए दोहरा दूं। पहली बात, जिसे तुम समझदारी समझते हो बुद्धि की, वह बुद्धि की भी समझदारी नहीं है। दूसरी बात, तुम जिसे बहुत कठिन समझ रहे हो, वह बहुत सहज है। सिर्फ तुमने प्रयास ही नहीं किया। तुम्हारी सारी शिक्षा-दीक्षा, समाज, संस्कार तुम्हें दौड़ना सिखाते हैं दूसरे के पीछे। महत्त्वाकांक्षा सिखाते हैं-धन, पद, प्रतिष्ठा, यश के लिए। दुर्भाग्य है हमारा कि अब तक हम एक ऐसा समाज भी पैदा न कर सके, जो तुम्हें कुछ सिखाता हो राज की वे बातें कि कैसे तुम अपने को पहचान लोगे। और उससे बड़ी कोई प्रतिष्ठा नहीं है। उससे बड़ी कोई अभीप्सा नहीं है।

रीडर्स मेल

वोट बैंक की चिंता क्यों?

महात्मा गांधी, जिन्होंने सारी दुनिया को अहिंसा और शांति की राह चलने की शिक्षा दी थी, आज उन्हीं के देश में बढ़ती हिंसा और शांति को ठेंगा दिखाना बहुत ही शर्मनाक है। भारत में हिंसक भीड़ से कानून हारता दिख रहा है। उसके शत प्रतिशत कारण हैं, लोगों का कानून से इसकी लचर व्यवस्था के कारण भरोसा उठना, न्यापालिका की कछुआ चाल, कुछ सत्ताधारियों और राजनेताओं की हिंसा करने वालों पर छत्रछाया होना। सरकार हिंसक भीड़ के लिए सख्ती दिखाए, कानून को किसी राजनेता या सत्ताधारी के हाथ की कठपुतली न बनने दे तो देश में कभी भी भीड़ किसी की जान न ले। सत्ताधारियों और राजनेताओं को अपने वोट बैंक की चिंता छोड़ देश की एकता एवं अखंडता की चिंता करनी चाहिए।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

पटाखे और आतिशबाजी

प्रति वर्ष दशहरे और दिवाली पर करोड़ों के पटाखों और आतिशबाजी से हवा में बेहिसाब जहर घोल दिया जाता है। ध्वनि प्रदूषण के साथ इनकी राख आदि की गंदगी अलग से होती है। जलने और अपंग होने के अलावा न जाने कितने जान-माल की हानि की घटनाओं का भी कोई हिसाब नहीं है। इस बड़ी धन राशि से पौध रोपण जैसे अच्छे कार्य भी किए जा सकते हैं, जो वास्तव में इन पवित्र पर्वों की महानता को कायम रख सकते हैं। पटाखे बेचने और जलाने वालों पर भी जुर्माना जरूरी है। जहरीले पटाखों और शराब जैसे घातक पेयों के स्थान पर अन्य अच्छी उपयोगी वस्तुओं के उत्पादन से सभी को लाभान्वित किया जा सकता है।

वेद मामूरपुर,नरेला

सिंगल यूज प्लास्टिक पर बैन

गांधी जयंती से देश में सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाया गया जो पर्यावरण प्रदूषण कम करने में हितकारी है। स्वच्छता में लगातार तीन बार नम्बर वन रहने वाले इन्दौर शहर ने तो प्लास्टिक और पॉलीथिन के खिलाफ पिछले तीन वर्षों से मोर्चा खोल रखा है। यदि इन्दौर का अनुसरण कर देश के अन्य शहरों में भी बर्तन बैंक शुरू किए जाएं तो टनों प्लास्टिक और पॉलीथिन का उपयोग रोका जा सकता है।

संजय डागा, हातोद, जिला इन्दौर

ऐसे बना करते हैं अमिताभ

अमिताभ अपनी कमजोरियों को खूबियों में बदलना बखूबी जानते हैं। वर्षों पहले अपनी भारी आवाज की वजह से ऑल इंडिया रेडियो द्वारा नौकरी के लिए अस्वीकृत नहीं किए जाते तो आज देश पद्म विभूषण और दादा साहब फाल्के पुरस्कार से नवाजे गए कलाकार से वंचित रह जाता। कुली की दुर्घटना के बाद अपने गिरते स्वास्थ्य के कारण अभिनय को अलविदा कह देते तो नई पीढ़ी उनका अभिनय देखने के मौके खो देती। जिंदगी के उतार-चढ़ाव के बाद भी पूरे दमखम के साथ दोबारा लड़ने का साहस नहीं रखते तो हम आज यह कहने की स्थिति में नहीं होते कि अमिताभ बच्चन ऐसे बना करते हैं।

डॉ. हेमन्त कुमार, गोराडीह, जिला-भागलपुर

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
• राष्ट्रीयता • कर्तव्य • समर्पण
वर्ष-29, अंक 10220
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक सी बी सिंह द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित।
समूह संपादक : मनोज तोमर। स्थानीय संपादक : रत्नेश मिश्र* ।
दूरभाष : दिल्ली कार्यालय : 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स : 23352370, दूरभाष : नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स : 2550750
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2015-2017
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी